Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
June 2024 5(6), 2641–2645

THE CALL OF THE FEMALE MIND – DHALLO

स्त्री मन की पुकार – धालो

Vaishali Sanjay Naik [1]

[1] Associate Professor, Indian Language Department, Dhempe College of Arts and Science, Miramar-Panaji- Goa 403001, India

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i6.2024.5777

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: Woman is considered the mother of culture. In the folk literature of every region, the philosophy of women's life is reflected through its various folk songs. The region of Goa is also no exception to this. The folk dances here, Dhallo, Fugdi songs, give a glimpse of Gomantak folk culture. The depiction of the joys and sorrows of women's life is the specialty of these folk songs. 'Dhallo' is a dance festival of women. It is a religious ritual as well as a festival. The ancient folklore scholars of Goa believe that Dhallo is not only a means of entertainment but a religious ritual to honor the mother goddess, a ritual performed for the good of the earth. In this research article, a discussion of the rituals and folk songs of Dhallo is presented.

Hindi: स्त्री को संस्कृति की जनक माना जाता है। हर क्षेत्र के लोकसाहित्य में स्त्री जीवन का दर्शन उसके विभिन्न लोकगीतों के माध्यम से लक्षित होते हैं। गोवा का क्षेत्र भी इससे अपवाद नहीं है। यहाँ के लोकनृत्यों में धालो, फुगडी गीतों में गोमंतकीय लोकसंस्कृति की झलक मिलती है। स्त्रीजीवन के सुख-दुःख का चित्रण इन लोकगीतों की खासियत है।'धालो' महिलाओं का एक नृत्य उत्सव है। यह एक धार्मिक अनुष्ठान होने के साथ-साथ एक उत्सव भी है। गोवा के प्राचीन लोककथा विद्वानों का मानना है कि धालो मनोरंजन का एक साधन ही नहीं बल्कि मातृदेवी के सम्मान का एक धार्मिक अनुष्ठान है, जो पृथ्वी के शुभ के उद्देश्य से किया जाने वाला एक अनुष्ठान। इस शोध आलेख में धालों के विधि-विधान तथा लोकगीतों की चर्चा प्रस्तुत हैं।

Keywords: Dhalo, Folk Culture, Entertainment, Religious Rituals धालो, लोकसंस्कृति, मनोरंजन, धार्मिक अनुष्ठान

1. प्रस्तावना

आदिम काल से धालो एक ऐसा अनुष्ठान है जो इस कामना के साथ किया जाता था कि धरती फले-फूलें, फसलें प्रचुर मात्रा में हों और मानव जाति के साथ-साथ पृथ्वी पर रहने वाले सभी जीवों को प्रचुर मात्रा में भोजन और पानी मिले। इसलिए, धालों में पत्तों, फलों, फूलों या सृष्टि के विभिन्न प्रतिकों का उल्लेख करते हुए अनेक गीत गाए जाते हैं। स्त्रीत्व और पुरुषत्व का मेल नई रचनाओं का सृजन करता है, इसलिए ऐसे प्रतीकात्मक संयोजन गीतों या मंच पर खेले जाने वाले खेलों में गुंथे हुए दिखाई देते हैं। गीतों में उन जीवों का भी उल्लेख या नाम होता है जो स्त्री और पुरुष दोनों हैं। गीतों में बीजों के जड़ पकड़ने, वृक्ष बनने और फल देने का भी वर्णन है और जब वे पककर खाने योग्य हो जाते हैं, तो सबसे पहले देवताओं को उपहार भेजे जाते हैं और फिर समाज के प्रत्येक घटक को उनकी सामाजिक स्थिति के अनुसार दिए जाते हैं। इसके पीछे एक भावना है कि यदि आप अपेक्षित चीज़ों का अनुकरण करते हैं और ईश्वर की पूजा करते हैं, तो अपेक्षित चीज़ें घटित होती हैं।

धालोत्सव सम्बन्धी गीत लोककलाओं के सन्दर्भ में, धोलोत्सव की निर्माण प्रक्रिया के बारे में अधिकारपूर्वक कुछ कहना बड़ा मुश्किल है। लेकिन वर्तमान दौर में उसके पारम्परिक स्वरूप को बनाये रखने का काम अशिक्षित जनसमाज विशेषकर कृषकों द्वारा ही हुआ है। धालोत्सव अशिक्षित जनसमाज में, ग्रामीण जनता एवं आदिवासी जन-जातियों में बड़े हर्षोल्लास के साथ खेला जाता है। इस धालोत्सव का निर्माण 'लोकमन' (folkmind) याने परम्परा से बहती संस्कृति की धारा से अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। संस्कृति में लोकजीवन का बीज गहरे में धंसे रहते हैं। सांस्कृतिक विरासत, क्षेत्र अंचल की विशिष्टता, पीढ़ियों के रीतिरिवाज आदि सभी का रसायन लोक हृदय में होता है और उभर आता है लोकोत्सव के माध्यम से। गोवा के लोकोत्सवों में विशेषता: धालोत्सव, शिगमोत्सव और जागर उत्सव विशेष महत्व के माने जाते हैं। इन लोकोत्सवों में धालोत्सव एक ऐसा उत्सव है जो

स्त्रियों द्वारा मनाया जाता है, जिसमें विवाहित स्त्रियों की प्रमुखता रहती है। इस उत्सव की खासियत और विशिष्टता यह है कि शायद यह भारतवर्ष के अन्य प्रान्तों में मनाये जाने वाले लोकोत्सव में एक अलग परम्परा का लोकनृत्य है।

कृषि क्षेत्रों में स्त्रियाँ बिना किसी गिले-शिकवे के कड़ी मेहनत करती हैं, घर की हर जिम्मेदारी को यथाशक्ति निभाती हैं। इस पुरुष प्रधान समाज में सभी अधिकार पुरुषों के हैं और स्त्रियाँ गर्दन झुकाए, बिना किसी शक-शुबह के उनके निर्णयों को स्वीकार कर लेती हैं। ग्रामीण व्यवस्था में अब तक कोई विशेष बदलाव नजर नहीं आता। हर कहीं पुरुष प्रधान समाज है और स्त्रियाँ विषम स्थिति में जीवित रहती हैं। ऐसी हालत में उनकी भावना, गुस्से, ईर्ष्या, द्वेष तथा अनुराग को प्रकट करने का काम लोकोत्सव के माध्यम से हो सकता है। 'धालो' ऐसा ही लोकोत्सव है जिसमें स्त्रियाँ एक स्थान पर एकत्रित होती हैं। उनके सपनों, आस्थाओं, आशाओं तथा इच्छाओं की अभिव्यक्ति धालोत्सव में होती है, जो मौखिक परम्परा में काव्य स्वरूप में उमड़ पड़ती है। यहाँ वे बंधनमुक्त होकर अपनी भावनाएँ प्रकट करती है। तरह-तरह के नृत्य और गीतों का आविष्कार होता रहता है। एक विरल ताल, लय और सुर में गाँव की गलियों गूंजने लगती हैं। बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सबका अस्तित्व इसमे समाया रहता है। ग्रामीण भाषा, शब्द लय और एक निराले सुर में अभिव्यक्त लोकसाहित्य की गरिमा और वैभवशीलता का श्रोताओं को परिचय मिलता है। गोवा में लोककलाओं का प्रदर्शन 'मांड' (चौक) स्थल पर आयोजन होता है। धालोत्सव, शिगमोत्सव और जागरोत्सव का 'मांड' (चौक) स्थल पर होता है। धालोत्सव, शिगमोत्सव और जागरोत्सव का 'मांड' (चौक) स्थल परम्परागत होता है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं होता। 'मांड' (चौक) स्थल यानी परम्परागत लोकोत्सव मनाने की जगह, जिसे आंगन भी कहा जाता है। हर एक 'मांड' की अपनी एक विशिष्ट परम्परा और रीति-रिवाज होते हैं। माडपुरुष, वनदेवता, धरतीमाता, स्थल देवता, ग्रामदेवता आदि देवी-देवताओं को सन्तुष्ट करके ही उत्सव मनाने की आज्ञा ली जाती है। हर एक गाँव के 'मांड' (चौक) स्थल के रीति-रिवाज, अनुष्ठान में फर्क नजर आता है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी चले आ रहे पारम्परिक स्वरूप में ही 'मांड' खड़ा रहता है। अगर धालोत्सव के दिन या उस समय काल में गाँव के किसी महत्वपूर्ण स्त्री या पुरुष की मृत्यु हो जाय तो उसे शोक-काल जानकर ग्रामीण पद्धतिनुसार 'मांड' स्थल पर दीया जलाना आवश्यक होता है। धालो का हम स्त्रियों का खेल भी कह सकते हैं। यहाँ 'मांड' स्थल पर स्त्रियों का वर्चस्व रहता है। कुछ गाँवों में गाँव के मुखिया द्वारा, या माडगुरु, माणदेवता का सम्मान किया जाता है। पर ज्यादातर गाँवों में बूढ़ी स्त्री द्वारा ही ये रीति-रिवाज सम्पन्न होते हैं। पहले दिन 'मांड' स्थल को गोबर से लीपा जाता है। तुलसी स्थल के सामने दीया जलाकर केले, शक्कर और पान-सुपारी से आमंत्रित देवताओं को सन्तुष्ट किया जाता है। किसी-किसी गाँव में तीन, पाँच, नौ या ग्यारह दिनों का धालोत्सव मनाया जाता है। पौष माह के किसी भी बुधवार या इतवार को सुहागिनें, धालो के 'मांड' स्थल पर एकत्रित होती हैं। धालो में नृत्य की विभिन्न क्रियाओं, शैलियों के दर्शन होते हैं। दो पंक्तियों में एक दूसरे के आमने-सामने खड़े होकर, हाथों में हाथ लिये, या कमर में हाथ डाले हुए, एक ताल पर, सूर पर आगे-पीछे पदन्यास करती है। 'धालो' शब्द मुंडारी भाषा से लिया गया है। इसका अर्थ है, हवा के झौके पर ऊपर नीचे होना। 'धालो' यानी 'झुलना' जैसे हवा के झोके पर पालना झूलता है, वैसे 'झुलना'। पर इस झुलने की क्रिया में भी एकरसता दिखायी देती है। इसलिए 'मांड' स्थल पर आये लोगों का मन भी अपने आप हिलने-डुलने लगता है। दिनभर के परिश्रम से, काम के बोझ से, स्त्रियों को एक राहत मिलती है, उनका मनोरंजन होता है। यही वजह है कि हर एक गाँव की स्त्रियाँ 'धालोत्सव' के दौरान अपने-अपने गाँव के 'मांड' पर एकत्रित दिखायी देती है।

पौष महीने की चाँदनी रात में, ठिठुरती शीत ऋतु में 'धालोत्सव' मनाया जाता है। तब प्रकृति की हलचल का एहसास कण-कण से मुखर हो उठता है। अबोली, मोगरे जैसे पुष्पों की सुगन्ध से 'धालो' का 'मांड' स्थल महक उठता है। पौष महीने की पूर्णिमा से कृष्ण षष्टी तक 'धालोत्सव' मनाया जाता है। 'धालो' में गाये जाने वाले गीत पारम्परिक ही होते हैं। इन गीतों में रामायण तथा महाभारत पर आधारित गीता का प्रचलन दिखायी देता है। इसी में 'फुगड़ी' जैसी नृत्यशैली के अनेक विविध रूपों का दर्शन भी होता है, जैसे पाती, झिम्मा, कचे, फेर-फुगड़ी आदि। 'धालोत्सव' मनाने का धार्मिक उद्देश्य यह भी होता है कि, लोगों की देवी-देवताओं सम्बन्धी विश्वास और धारणा । पौष यानी 'मालन' महीना गोवा के श्रद्धालु की यह आस्था है कि भूत-प्रेतों का अस्तित्व इस महीने में ज्यादा होता है। इसलिए दोपहर, या रात के समय बच्चों और गर्भवती महिलाओं को बाहर नहीं निकलने दिया जाता। भूतों-प्रेतों के आवागमन क्रिया के रोकथाम के लिए 'धालोत्सव' में 'मांड' स्थल पर दैवी विधि विधान और विभिन्न अनुष्ठान किये जाते हैं। ग्रामदेवता का कौल लेकर गाँव की सुरक्षा का भार क्षेत्रीय देवताओं पर छोड दिया जाता है। बार्देश के रेवाडा गाँव में 'धालो' पाँच दिन का उत्सव है। इन पाँच दिनों में स्त्रियों जो गीत गाती हैं, उनमें ग्रामदेवता, खेतीबाड़ी, पशु-पक्षी आदि का विस्तृत बित्रण होता है। आखिरी रात में चावल, मूंग आदि की खिचड़ी पकाकर घर के आसपास चारों दिशा में फेंका जाता है। अपन घर, परिवार को किसी भी प्रकार की बाधा से बचाये रखने के लिए उनका यह प्रयास परम्परा से होता आ रहा है।

यह विधि-विधान, रीति-रिवाज और परम्परायें पीढ़ियों से चली आ रही हैं। इसे अंधविश्वास कहे या हमारे सांस्कृतिक विरासत का रूप कहे, पर वर्तमान दौर में भी गाँव की ग्रामीण भोली भाली जनता इसे पूरे जतन से आस्था और उल्लास से मनाती आई है। यहाँ अज्ञानता और ज्ञान, अशिक्षा या शिक्षा का कोई सवाल नहीं उठता। धालो उत्सव में स्त्रियों आमने-सामने खड़ी रहकर एक दूसरे का हाथ थामें या कमर में हाथ डाले पद संचालन करती हुई गाती है। धालो की शुरुआत में जो गीत गाया जाता है, वह इस प्रकार से है-

प्रथम पंक्ति : आर्तीक महीना कार्तिक महीना
मालन पूजन जाला गे ऽ
मालन पूजन जाला गे ऽ,
दूसरी पंक्ति : जाला जाल्यार बरपां जाला तुळशी जागा आमी बेनू गे,

तुळशी माती आमी हाडू गे

स्त्रियाँ कहती हैं कि कार्तिक महिने की पूजा शुरू हो गयी है, अगर मालन पूजन हो गया है तो अच्छा है, हम तुलसी के लिए जगह साफ करे, मिट्टी लाये।

फिर एक बार प्रथम पंक्ति की स्त्रियाँ प्रथम पंक्ति को दोहराती हुई गाती हैं-

प्रथम पंक्ति :आर्तीक महीना कार्तिक महीना मालन पूजन जाला गे ऽ
मालन पूजन जाला गे S
दूसरी पंक्तिः जाला जाल्यार बरां जाला तुळशी पेड़ी
आमी घालू गे, तुळशी खूर आमी पालू गे

मालन पूजन हो गया तो अच्छा है, हम तुलसी की बुनियाद तैयार करें, तुलसी की नींव डालें। फिर एक बार प्रथम पंक्ति को दोहराया जाता है आर्तीक महीना कार्तिक महीना ..... जिसके जवाब स्वरूप दूसरी पंक्तियों की स्त्रियों गाती हुई कहती है।

दूसरी पंक्ति :जाला जाल्यार बरां जाला तुळशी रोप आमी लावू गे,
तुळशी रांगोळी घालू गे,

हो गया तो अच्छा है, तुलसी का पौधा हम लगवाये, तुलसी के आगे रंगोली बनायें।

श्रद्धालुओं के मतानुसार, तुलसी में तैंतीस कोटि देवी-देवता विद्यमान है. ऐसी व्यापकता, महामाया का साक्षात् रूप होने के कारण, उसे स्त्रियों द्वारा ही प्रधानता दी जाती है इसलिए स्त्रियाँ अपने धालोत्सव के प्रारम्भ में तुलसी के गुणगान को, निर्माण का वंदन गीत गाती है। जो प्रकृति स्वरूप भी है, वही वजह है कि इन गीतों में ग्राम जीवन की खुशबू रची-बसी है। घालोत्सव के गीतों में अधिकतर स्त्रियों अपने जीवनकाल के दैनंदिन कार्यों का विश्लेषण मात करती हैं दिखाई देती हैं। जिसका स्वरूप हम अगले गीतों में देख सकते हैं।

प्रथम पंक्ति :पेटवीला दिवा ठेवीला माणार देवाच्या देवरंभा सांगात गो,
देवाच्या देवरंभा सांगात गो,
दूसरी पंक्ति : देवाच्या देवरंभा येतीया म्हणती लेना लेती काजल कुंकमाचा गो,
तेलतुपाच्या मळीचा गो

उपर्युक्त पद का सामान्य भाव यही है कि दीया जलाकर 'माण' स्थल पर रख दिया गया है। प्रथम पंक्तियों की स्त्रियाँ दूसरी पंक्तियों की स्त्रियों से कहती हैं कि देवरंभा को 'माण' स्थल पर आमंत्रित करो। दूसरी पंक्तियों की स्त्रियाँ जवाब स्वरूप कहती हैं कि देवरंभा को का जल, कुमकुम और तेल घी के बहुमान पर ही आना स्वीकार है। प्रस्तुत गीत में स्त्री सुलभ स्वाभिमान रक्षा सम्बन्धी अपेक्षा की जाती है। इसी प्रकार रोजमर्रा की जीवनाश्वयक वस्तुओं का नाम ले-लेकर इस गीत को बढ़ाया जाता है। अगला गीत इस प्रकार है-

प्रथम पंक्तिः फोडिले नारल ठेवीले माणार देवा शिरणी गे, वाटली सवाशिणी गे.
दूसरी पंक्ति: फोडिले नारळ ठेवीले माणार सखीया साद घाल गे, माणार खेळूक येयात गे.

यहाँ सामान्य भाव यही है कि नारियल को तोड़कर उसके छोटे-छोटे टुकड़े (शिरणी) किये हैं और देवी-देवताओं को भोग चढ़ाया है, सुहागिनों में बाँटा है। दूसरी पंक्ति में धालो खेलने वाली स्त्रियाँ अपनी सखी-साथियों को माड स्थल पर बुलाने के लिए आवाज (साद) देती हैं। यहाँ अनेकता में एकता का भाव कूट-कूटकर भरा दिखायी देता है। स्त्रियों द्वारा अपने खेल में अन्य के सहयोग को कामना भी दिखायी देती है। यहाँ धालो के गीतों में विभिन्नता और विविधता के दर्शन भी होते हैं। इन गीतों में गाँव का परिवेश और भी सजीव रूप में उभरता है।

प्रथम: आम्याची आमली पिलाची कोबडी कोणी मोडली गे सये
कोणी मोडली-3
दूसरी पंक्ति: बनयो शिमयो देव माणार येता वाटा बेनयली गे, सये वाट
बेनयली-3

यहाँ भी सामान्य भाव यही है कि आम के पेड़ से कच्चा आम और चुजों वाली मुर्गी को किसने तोड़ा है। ग्राम, स्थल देवत, माण स्थल पर आ रहे हैं। जिनका कोई अर्थ नहीं होता, सिर्फ आम जीवन का विश्लेषण या जिक्र होता है। इस गीत को सारे देवी-देवताओं का नाम लेकर आगे बढ़ाया जाता है। गोवा में सातेरी, शांतादुर्गा, महालक्ष्मी, भूमिका आदि स्त्री देवताओं का अस्तित्व मिलता है। यही देव-देवताओं धरतीमाता, वरदेवता, खुटीमाता या छठीमाता के रूप में गीतों के माध्यम से प्रकट होती है। जिसका स्वरूप हम अगले गीत में देख सकते हैं।

तळयेच्या तुंबा गे बाई, कापूर कोणे धुला गे बाई
हा कापूर कोणे धुला-2
धर्तरी वनदेवता माय आयल्या गें
तातून पाणी न्हाल्या गें-2

यहाँ भावार्थ यही है कि तालाब के पानी में कापूर किसने धोया है। धरती माता, वनदेवता आयी है, उस पानी में न्हाई है। अगला गीत भी देवी-देवताओं का नाम लेकर ही गाया जाता है। यहाँ ग्रामीण जन जीवन के देवी-देवताओं सम्बन्धी धार्मिक विश्वास को देखा जा सकता है।

रथ तुझिया दांड्यो साडे तीनशे गुड्यो,
रथात कोण देव बसे गे-2
बसे बसे बामनदवे बसे,
पुढे गणपती पाठी पुढ़े रथ कसा जाई गे
त्यावर ठेवीले पान गे
रथाची करु आमी सेवा गे.

यहाँ सामान्य तौर पर यही भाव है कि, साढ़े तीन सौ गुढ़ियाँ वाले रथ कौन विराजमान हैं। रथ में ब्राह्मण देवता बैठे हैं। आगे गणेशजी है, रथ आगे-पीछे हो रहा है। इस रथ के सम्मान में हम पान-सुपारी रखकर इस रथ की हम सेवा करेंगे इस तरह इस गीत में सभी देवी-देवताओं का नाम लेकर गीत को बढ़ाया जाता है। पाँच दिन के इस धालोत्सव के गीत रामायण के राम-सीता, महाभारत के पांडवों का भी समावेश होता है। फुगडी नृत्य के दौरान काव्यमय ढंग से पति का नाम लेने का रिवाज, जिसे 'उखाणा' कहते हैं, लिया जाता है। अन्तिम रात में रंभा आती है। 'रंभा' जिन स्त्रियों में आती है। यानी कि, देवी उनके शरीर में प्रवेस करती है, घूमने लगती है इसमें कुँआरी कन्या का भी समावेश होता है।

पिगली घूमती है, शिकार सावज का नाटक खेला जाता है। स्त्रियों को ही वर-वधू बनाकर शादी होती है आदि प्कार के खेल खेले जाते हैं। धालो की समाप्ति पर जो गीत गाया जाता है. वह इस प्रकार है।

शेण कालविता शेण कालविता,
शेणांक पडले किडे रे धालो-2
शेणाच्या माथ्यार फुला झेलो,
आयच्यान धालो संपल्या रे-2

मतलब यही है कि गोबर पाथते-पाथते गोबर में कीड़े पड़ गये हैं गोबर के माथे पर पुष्यों का गजरा है और आज से धालो खतम हो गये हैं। इसी प्रकार सभी पुष्पों तथा गंध का नाम लेकर गीत को बढ़कर समाप्त करते हुए कहती है-

आमी गे खेल केला, देवांन मान दिला

त्यानी आमका आशीर्वाद दिला।

मतलब हमने खेल खेला, भगवान का सम्मान किया और भगवान ने हमें आशीष दिया है।

धालो समाप्त होते ही, थके मन और शिथिल तन अपने-अपने घर जाते हैं। सूरज की पहली किरण के साथ धालोत्सव समाप्त होता है। पर स्त्रियों का मन माण स्थल पर घूमता रहता है। मन में आशा, उत्साह का संचार होता है। वर्तमान दौर में भी धालो खेलने की परम्परा विद्यमान है। पर शहरीकरण, यांत्रिकीकरण और आधुनिक शिक्षा स्त्रियाँ जब 'मांड' स्थल पर प्रवेश करती हैं, तब पारम्परिक गीतों के अनेकानेक शब्दों में बदलाव आता है। बहुत कुछ पुराना घट जाता है, बहुत कुछ नया जुड़ जाता है पर भाव में परिवर्तन नहीं आता। इसलिए वर्तमान आधुनिक जनसमाज में घालोत्सव अपनी पुरातन और अभिनव पहचान बनाये हुए है।

संर्दभ सूची

डॉ नायक जयंती, लोकबंध, गोवा कोंकणी अकादमी, पणजी,2020
भवाळकर तारा, लोकसाहित्यातील स्त्री प्रतिमा, सुगावा प्रकाशन, पुणे, 1990
वेरेंकर श्याम, धालो, कोंकण टाइम्स पब्लिकेशन,1984
माने वसुधा, गोव्यातील धालो, मकरंद साहित्य,1965
खेडेकर विनायक, लोकसरिता, कलाअकादमी, पणजी, 1993